बिनी के जानवर

उसने कैसे समूह बनाए

मिलसेंट सेल्सैम

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

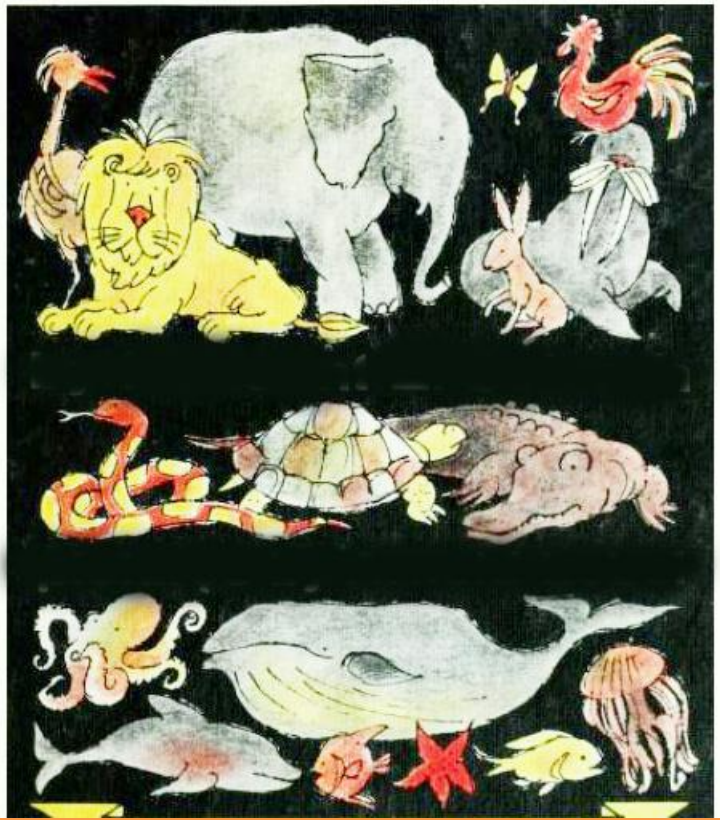

बिनी के जानवर

उसने कैसे समूह बनाए

मिलसेंट सेल्सैम

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

बिनी एक साफ़-सुथरा लड़का था.

वो अपनी हरेक चीज़ को करीने से

सही जगह पर रखता था.

वो बड़ी किताबों को एक जगह रखता.

वो छोटी किताबों को दूसरे जगह रखता.

वो मध्यम आकार की पुस्तकों को

अलग से एक तीसरे स्थान पर रखता था.

जब उसके पास

खूब सारे सिक्के इकट्ठे हो जाते,

तो वो चवन्नियों को एक ढेरी,

अठन्नियों को दूसरी ढेरी,

और एक रुपए के सिक्कों को

तीसरी ढेरी में रखता था.

एक दिन बिनी की माँ ने उसके पिता से पूछा,

"आप बिनी के बारे में क्या सोचते हैं,

वो ठीक-ठाक तो है?

डेविड की माँ कहती हैं कि डेविड की

सभी चीज़ें हमेशा फर्श पर ही बिखरी रहती हैं!

जॉन की माँ का भी यही रोना है.

जॉन हमेशा चीज़ों को इधर-उदार फेंकता रहता है.

परन्तु बिनी

अपनी चीज़ों को,

हमेशा सही जगह पर रखता है."

"अरे तुम बिनी के बारे में बिल्कुल फ़िक्र मत करो," बिनी के पिता ने कहा.

"वो एक अच्छा और प्यारा लड़का है.

वो अपनी सभी चीज़ों को बड़े

कायदे-करीने से रखता है."

एक दिन बिनी सैर करने

समुद्र के किनारे गया.

वहां उसे कई अनूठी चीज़ें मिलीं.

उसने उन्हें एक कागज़ की थैली

में इकठ्ठा किया.

जब वो घर आया

तब उसने उन चीज़ों को

थैली में से बाहर निकाला.

और उन्हें संभाल कर देखा.

कुछ देखने में ऐसी थीं.

कुछ ऐसी.

उनमें से एक चीज़

पांच पंखुड़ियों वाले फूल

जैसे लगती थी.

बिनी ने अपनी माँ को बुलाया.

"माँ," उसने पूछा,

"क्या आपको इन चीज़ों के बारे में कुछ पता है?"

"ये सीप-शंख, जानवरों के बाहरी खोल या कवच हैं."
बिनी की माँ ने जवाब दिया.

बिनी ने कहा, "सीप-शंखों का जानवरों से
कुछ रिश्ता है, यह तो मुझे पता नहीं था."

माँ ने कहा, "यह सच है. कुछ जीव, समुद्र के पानी में
घुले खनिजों से सीप और शंख जैसे खोल बनाते हैं.

देखो यह एक बड़ी सीपी है.

और यह एक घोंघा है.

पर यह गोल दिखने वाली चीज़ क्या है?

मुझे पक्की तरह नहीं मालूम,

पर हम इसका जवाब किताबों में ढूंढ सकते हैं."

माँ ने बिनी को समुद्री जीवों के बारे में
एक किताब दी.

किताब में बहुत सारे जीवों के चित्र थे.

उसे उसमें एक गोल आकार का सीप दिखा,

जो घोंघे का खोल था.

फिर उसे एक शंख दिखा जिसमें कई नोकें थीं.

वो स्टारफिश (सितारा मछली) थी.

फिर उसे कई पैरों वाला एक खोल दिखा.

वो केकड़ा था.

बिनी अपने कमरे में वापिस गया.

उसने सभी बड़ी सीपियों को एक ढेर में रखा

और सभी घोंघों को एक दूसरी ढेरी में.

उसने नोकों वाले शंखों को एक-साथ रखा.

और स्टारफिश और केकड़ों को

अलग-अलग रखा.

फिर उसने एक तख्ती बनाई और उस पर
लिखा:-

बिनी के दोस्त उससे मिलने आये. उन्होंने बिनी की बनाई हुई तख्ती को देखकर पूछा,

"तुम इन चीज़ों को जानवर क्यों बुलाते हो?"

"क्योंकि यह वाकई में जानवर हैं," बिनी ने जवाब दिया.

जॉन ने कहा, "परन्तु भाई मैं तो इन्हें जानवर नहीं मानूंगा."

"ठीक है," फिर बिनी ने पूछा.

"फिर जानवर कौन होते हैं?"

जॉन ने कहां, "अरे भाई, घोड़ा जानवर होता है,

ज़ेबरा और बिल्ली भी जानवर ही हैं, और हाथी भी!

जानवरों का सिर और शरीर होता है और सभी के चार पैर होते हैं."

बिनी ने पूछा, "क्या चिड़िये जानवर होती हैं?"

जॉन ने कहा, "चिड़ियों के केवल दो ही पैर होते हैं.

चिड़िये जानवर नहीं होती हैं."

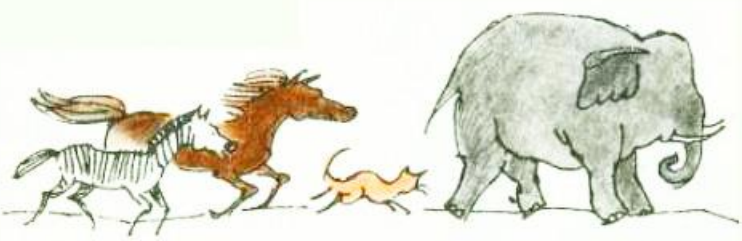

"और मछलियां?" बिनी ने पूछा,

"उनके तो पैर ही नहीं होते."

जॉन ने कहा, "मछलियों को भी मैं जानवर नहीं मानूंगा."

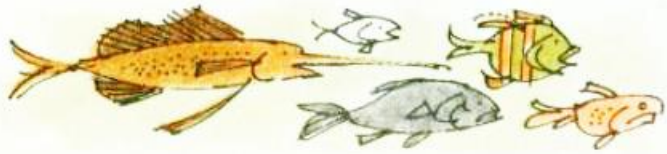

अंत में बिनी ने पूछा, "अच्छा यह बताओ कि तितली क्या होती हैं?"

जॉन ने कहा, "इसका उत्तर मुझे पता है.
तितलियाँ, कीड़ों के समूह की हैं.
वे जानवर नहीं हैं."

बिनी ने कहा, "पर मेरी माँ तो इन बड़ी सीपियों और घोंघों को जानवर समझती हैं."

"चलो एक बार हम दुबारा उनसे जाकर पूछते हैं," जॉन ने सुझाव दिया.

फिर दोनों लड़के बिनी की माँ ने पास गए.

बिनी ने पूछा, "माँ, आप कहती हैं कि बड़ी सीपियाँ और घोंघे दोनों जानवर होते हैं."

"हाँ," बिनी की माँ ने उत्तर दिया.

"कोई जीवित चीज़ अगर वो पौधा नहीं है, तो वो जानवर ही होगी."

बिनी ने पूछा, "परन्तु, जीवित चीज़ भला क्या होती हैं?"

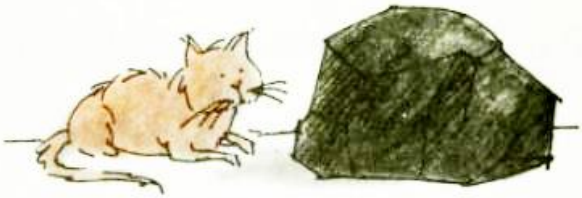

माँ ने बिनी से पूछा, "देखो हमारी बिल्ली जीवित है, जबकि वो बड़ा पत्थर जीवित नहीं है. तुम मुझे बताओ कि बिल्ली और पत्थर में क्या अंतर है?"

"पत्थर खाना नहीं खाता ही," बिनी ने जवाब दिया.

"पत्थर सांस नहीं लेता है," बिनी ने सोचकर कहा.

तब बिनी की माँ ने कहा,
"बहुत अच्छे! देखो पत्थर
अपने जैसे अन्य पत्थर पैदा नहीं कर सकता है.

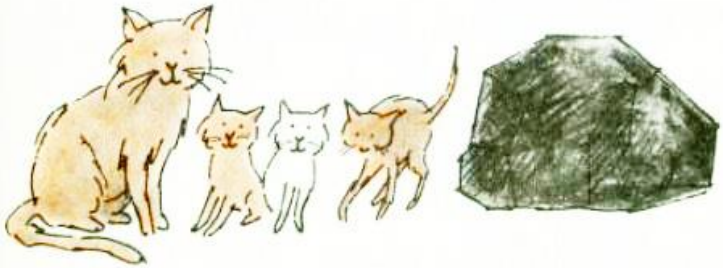

तुम्हारी बड़ी सीपियाँ और घोंघे यह सभी काम कर सकते हैं, और वे पौधे नहीं हैं."

जॉन ने आखिर में माँ की बात मानते हुए कहा,

"मुझे भी लगता है कि यह सब जानवर ही हैं."

तब बिनी ने खुश होते हुए कहा,
"इसका मतलब है कि जो तख्ती मैंने लगाई थी, वो सही थी."

उस रात बिनी ने अपनी माँ, पिता और छोटे भाई ऐडी के साथ खाना खाया.

बिनी ने पूछा, "पिताजी, क्या हम सब लोग जानवर हैं?"

"देखो..... " उसके पिता सोचने लगे.

"देखिए पिताजी," बिनी ने कहा,

"हम सभी लोग ज़िंदा हैं.

हम खाते हैं और साँस लेते हैं, हैं न?

हम लोग पेड़-पौधे भी नहीं हैं, सही है न?"

पिताजी ने कहा, "एकदम सही."

बिनी ने पूछा,
"फिर क्या हम लोग जानवर हैं?"

बिनी की माँ ने कहा, "तुम सही कह रहे हो."

पिताजी ने पूछा, "फिर हम दूसरे जानवरों से किस प्रकार अलग हैं?"

“हम लोग बात कर सकते हैं, पर जानवर बात नहीं कर सकते,” बिनी ने कहा.

बिनी ने कहा, " अपना छोटा ऐडी तो एकदम जानवरों जैसा है, क्योंकि वो तो बोल भी नहीं सकता है."

तभी ऐडी ने कहा, "पा..... पा."

"ज़रा देखो," बिनी की माँ ने कहा,

"ऐडी बोलना सीख रहा है. वो दूसरे जानवरों से काफी अलग है."

"परन्तु अभी तो ऐडी जानवरों जैसा ही है," बिनी ने कहा.

"नहीं, चुप रहो," माँ ने थोड़ा गुस्से में कहा.

"अभी भी ऐडी और जानवरों में काफी अंतर है."

"जिन जानवरों के बारे में हमें पता है, ज़रा हम उनके बारे में सोचें," बिनी ने सुझाव दिया.

"अभी नहीं," माँ ने कहा, "हमारे पास बहुत सी पुरानी पत्रिकाएं पड़ी हैं. पहले तुम उनमें से जानवरों के चित्र खोजो और काटो."

इस काम में जॉन ने बिनी की सहायता की.

दोनों जानवरों के चित्र ढूंढने में लग गए.

उन्होंने शेर, चीतों, तितलियों और साँपों के चित्र काटे.

उन्होंने कीड़े-मकोड़ो, मेंढक और कुत्तों के चित्र काटे.

कई जगह उन्हें बंदरों, व्हेलों, चिड़ियों, मछलियों और घोंघों की तस्वीरें मिलीं.

कुछ ही देर में चित्रों की एक ऊंची ढेरी बन गई.

"जो चित्र एक जैसे दिखते हैं, चलो उन्हें एक-साथ रखते हैं," बिनी ने सुझाव दिया.

"अच्छा," कहकर जॉन ने उसकी बात मान ली.

एक ढेरी में बिनी ने चिड़िये, तितलियाँ और चमगादड़ रखे.

"इन सभी के पंख हैं," उसने कहा.

एक दूसरे ढेरी में उसने कीड़े और सांप रखे.

"क्योंकि वे सभी लम्बे और पतले हैं," बिनी ने कहा.

एक अन्य ढेरी में उसने चार पैरों वाले जानवरों को रखा.

जॉन ने कहा, "मैं पानी में रहने वाले सभी जीवों को एक-साथ रख रहा हूँ."

उसने बिनी को एक ढेरी दिखाई जिसमें केवल मछलियां, सीपियाँ, घोंघे और जेलिफ़िश थीं.

"ये देखने में तो एक जैसे नहीं लगते," बिनी ने कहा.

"मुझे मालूम है," जॉन ने उत्तर दिया.

"परन्तु ये सभी जीव समुद्र में ही रहते हैं,"

बिनी ने कहा, "लेकिन इससे क्या फायदा होगा.

मैं चाहता हूँ कि वो सभी देखने में एक-सामान हों."

इतनी देर में बिनी के पिता कमरे में आये.

उन्होंने पूछा, "तुम लोग कितने जानवर खोज पाए?"

"बहुत सारे," बिनी ने जवाब दिया, "देखिये, जो जानवर देखने में एक-जैसे हैं हमने उन्हें एक-साथ रखा है."

बिनी के पिता ने चित्रों के अलग-अलग समूहों को देखा.

"मुझे इनमें कुछ गड़बड़ नज़र आती है," उन्होंने कहा,

"तुमने चिड़ियों, तितलियों और चमगादड़ों को एक-साथ क्यों रखा है?"

"क्योंकि इन सभी प्राणियों के डैने हैं," बिनी ने झट से जवाब दिया.

बिनी के पिता ने कहा, "परन्तु चिड़ियों के पंख मुलायम होते हैं."

"जबकि चमगादड़ों का रोयेंदार फर होता है और तितलियों के पंखों पर छोटे-छोटे स्केल होते हैं.

मेरी राय में इन्हें एक-साथ रखना ठीक नहीं है."

बिनी ने पूछा, "हमें इस बारे में ठीक और पक्की जानकारी कौन दे सकता है?"

बिनी के पिता ने कहा, "मैं तुम्हें म्यूजियम ले चलूँगा.

वहां शायद कोई व्यक्ति तुम्हारी मदद कर पाए."

म्यूजियम

अगले शनिवार पिताजी, बिनी और जॉन दोनों को, म्यूजियम ले गए.

बिनी के पिता ने दरवाज़े पर खड़े दरबान से पूछा, "क्या कोई व्यक्ति इन जानवरों को ठीक तरह से लगाने में हमारी मदद कर सकता है?"

दरबान ने जवाब दिया, "आप लोग चौथी मंज़िल पर प्रोफेसर वुड के पास जाएँ."

प्रोफेसर वुड से मिलने पर सबसे पहले बिनी ने ही सवाल पूछा.

"हमारे पास खूब सारे जानवरों के चित्र हैं.

हम उन्हें अलग-अलग समूहों में रखना चाहते हैं.

क्या इसमें आप हमारी कुछ मदद कर सकते हैं?"

प्रोफेसर वुड ने कहा, "पहले मैं ज़रा तुम्हारे चित्रों को तो देखूं."

बिनी ने प्रोफेसर को वो ढेरी दिखाई जिसमें कीड़ों और साँपों के चित्र थे.

"इन दोनों को एक-साथ रखना ठीक नहीं होगा," प्रोफेसर वुड ने कहा.

"क्यों नहीं?" बिनी ने पूछा.

"दोनों देखने में तो एक-जैसे ही हैं?"

प्रोफेसर वुड ने कहा, "परन्तु इस बात का इतना महत्त्व नहीं है. हम उन जीवों को एक साथ रखते हैं जिनका ढांचा एक-समान होता है."

"ढांचा?" बिनी ने पूछा,

"वो क्या होता है?"

प्रोफेसर वुड ने कहा, "इसका मतलब
जानवर के अंगों और उनके एक-दूसरे के
साथ जुड़े होने से सम्बंधित है."

"पहला प्रश्न जो हम पूछते हैं, वो है:
क्या जानवर की रीढ़ की हड्डी है?
सभी जानवरों की या तो रीढ़ की हड्डी होती है,
या नहीं होती है. और इस प्रकार जानवर
दो बड़े समूहों में बंट जाते हैं."

"केवल दो समूहों में!" बिनी ने चकित होते
हुए पूछा.

"यह तो बस शुरुआत है," प्रोफेसर ने कहा.

"इन चित्रों की दो ढेरियां बनाओ. पहली ढेरी
में रीढ़ की हड्डी वाले जानवरो को रखो.
दूसरी ढेरी उन जानवरों की हो जिनकी रीढ़
की हड्डी न हो. हाँ, एक बात ज़रूर ध्यान
रखना. हर हड्डी वाले जीव की रीढ़ की हड्डी
भी ज़रूर होगी. फिर तुम वापिस आना और
मैं आगे तुम्हारी मदद करूंगा."

बिनी ने कहा, "ठीक है."

"अच्छा," जॉन ने कहा.

"बहुत धन्यवाद," बिनी के पिता ने कहा.

"जल्दी वापिस आना," प्रोफेसर वुड ने
मुस्कुराते हुए कहा.

अगले दिन बिनी और जॉन ने दुबारा चित्रों को गौर से देखा.

"क्या चिड़ियों की रीढ़ की हड्डी होती है?" बिनी ने पूछा.

"हाँ, क्या तुमने कभी मुर्गी नहीं खाई है?" जॉन ने कहा.

"अरे हाँ," यह कहकर बिनी ने चिड़िया के चित्र को रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी में रख दिया.

"और तितली?" जॉन ने पूछा.

बिनी ने कहा, "वो तो एकदम रुई की तरह मुलायम होती है."

"सांप?" जॉन ने पूछा.

"फ्रेड के पास एक सांप का कंकाल है.

बिना रीढ़ की हड्डी वाले जानवर

यानी सांप को रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी में रखा जाए," बिनी ने कहा.

"कीड़े?" जॉन ने पूछा.

"उनकी रीढ़ की हड्डी नहीं होती है," बिनी ने कहा.

"मछली?" जॉन ने पूछा.

"मुझे मालूम है वो कहाँ जाएगी.

हर बार जब मैं मछली खाता हूँ,

तो मुझे उसकी रीढ़ की हड्डी दिखती है."

बिनी ने पूछा, "पर यह सीप वाले जीव कहाँ जायेंगे?"

जॉन ने कहा, "सीप का सख्त भाग तो बस बाहर ही होता है.
मैंने एक बार बड़ा घोंघा खाया था और वो अंदर से एकदम नरम था.
चलो, फिर उसे बिना रीढ़ की हड्डी वाली गड्डी में रखते हैं."

बिनी ने कहा, "मैंने भी एक बड़ी सीप खाई थी, वो भी अंदर से एकदम नरम थी."

जॉन के कहा, "ठीक है, उसे भी बिना रीढ़ की हड्डी वाली गड्डी में जाने दो."

उन्होंने बंदरों, चीतों, शेरोन, हाथियों, हिरणों, कुत्तों और बिल्लियों को रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी में रखा.

बिनी ने कहा, "इन सबकी हड्डियां होती हैं यह मुझे अच्छी तरह पता है."

रीढ़ की हड्डी वाले

बाकी जानवरों को कहाँ रखा जाए, यह बिनी और जॉन को समझ नहीं आया.

उन्होंने उन्हें अलग से एक तीसरी ढेरी में रख दिया.

फिर बिनी, जॉन और बिनी के पिता दुबारा प्रोफेसर वुड के पास गए.

प्रोफेसर ने चित्रों के समूहों को देखकर कहा, "बहुत बढ़िया. परन्तु यह तीसरी ढेरी में क्या है?"

"हमें समझ में नहीं आया कि इन जानवरों को कहना रखें," बिनी ने सफाई देते हुए कहा.

प्रोफेसर वुड ने तीसरी ढेरी में रखे जानवरों को देखा और कहा,

"यह केकड़े और स्टारफिश, बिना रीढ़ की हड्डी वाली गड्डी में जायेंगे. वे बाहर से कठोर होते हैं परन्तु उनके अंदर कोई हड्डी नहीं होती है."

“और यह मेंढक रीढ़ की हड्डी वाले समूह में जायेंगे.“

फिर प्रोफेसर वुड ने रीढ़ की हड्डी वाली पूरी ढेरी को उठाया और कहा,

"तुम्हें याद है न. मैंने कहा था कि यह तो सिर्फ शुरुआत है.

अब हम इस ढेरी को पांच अलग-अलग समूहों में बाँट सकते हैं.

पहली ढेरी में मछलियां होंगी.

दूसरी में ऐसे जीव होंगे जो पानी और ज़मीन दोनों पर रहते हैं –

जो शिशु अवस्था वो पानी में बिताते हैं

और बड़े होने के बाद ज़मीन पर आ जाते हैं.

मेंढक इनका अच्छा उदाहरण है.

तीसरी ढेरी में होंगे रेंगने वाले सरीसृप जैसे - सांप, छिपकली, कछुए और मगरमच्छ.

चौथी ढेरी में चिड़िये होंगी - उनमें हरेक के पंख होंगे.

और आखिरी ढेरी में होंगे स्तनपाई जीव - उनके शरीर पर बाल और रोयेंदार फर होता है.

घर जाने के बाद तुम रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी को इन पांच समूहों में बाँटना:

मछली, पानी और ज़मीन दोनों में रहने वाले थलजली, रेंगनेवाले सरीसृप, पक्षी और स्तनपाई."

बिनी ने पूछा, "बिना रीढ़ की हड्डी वाली ढेरी का हम क्या करें?"

"तुम्हारे पास अभी के लिए काफी काम है," प्रोफेसर ने उत्तर दिया.

"क्या हम बिना रीढ़ की हड्डी वाले जीवों के लिए आपके पास दुबारा वापिस आ सकते हैं?" जॉन ने पूछा.

"ज़रूर," प्रोफेसर वुड ने जवाब दिया.

"तब क्या हमें जानवरों को अलग-अलग समूहों में रखना पूरी तरह समझ में आ जायेगा?" बिनी ने पूछा.

प्रोफेसर वुड ने कहा, "पूरी तरह तो नहीं, पर हाँ, कुछ तो समझ में आएगा ही. बाद में तुम इन छोटी ढेरियों को और छोटी-छोटी ढेरियों में बाँटना भी सीख सकते हो."

बिनी ने पूछा, "आपका मतलब हैं कि रीढ़ की हड्डी वाली गड्डी को पांच ढेरियों में बांटने के बाद हम इन ढेरियों की और छोटी-छोटी ढेरियां बना सकते हैं?"

प्रोफेसर वुड ने कहा, "हाँ बिल्कुल, दुनिया में लगभग 17, 000 किस्म की मछलियां हैं और हज़ारों प्रकार के जलथली, सरीसृप, पक्षी और स्तनपाई प्राणी हैं. प्रत्येक समूह को और छोटे-छोटे गुटों में बांटा जा सकता है."

बिनी ने कहा, "मुझे लगता है कि यह सब करने में हमें बहुत समय लगेगा."

प्रोफेसर ने कहा, " तुम चाहो तो इस काम में अपना सारा जीवन बिता सकते हो. मैंने तो सारी ज़िंदगी यही किया है."

"सारी ज़िंदगी!" बिनी ने आश्चर्य के साथ कहा.

"यकीन नहीं होता!" जॉन चिल्लाया.

"हाँ," प्रोफेसर वुड ने कहा.

"परन्तु तुम्हें इसमें सारी ज़िंदगी खपाने की ज़रुरत नहीं है. तुम्हारी रूचि केवल मुख्य समूह जानने तक ही सीमित यही.

और सभी अलग-अलग, छोटे समूहों को जानना भी उतना ज़रूरी नहीं है."

"फिर सबसे ज़रूरी क्या है?" बिनी ने पूछा.

प्रोफेसर ने कहा, "देखो तुम लोग जानवरों के एक समूह को दूसरे से अलग करना सीख रहे हो.“

"परन्तु मैं इन सभी समूहों को एक-साथ इकठ्ठा करता हूँ. यही करने में मेरा सारा समय बीतता है," प्रोफेसर वुड ने कहा.

"आप इन्हें आपस में एक-साथ कैसे लाते हैं?" जॉन ने पूछा.

"मैं यह जानने की कोशिश करता हूँ कि इन जानवरों को एक-दूसरे से किस प्रकार का रिश्ता है," प्रोफेसर ने मुस्कुराते हुए कहा.

"क्या जानवरों के भी रिश्तेदार होते हैं?" बिनी ने मुस्कुराते हुए पूछा.

"हाँ," प्रोफेसर वुड ने कह, "परन्तु हरेक जानवर के नहीं. लेकिन एक प्रकार दिखने वाले जानवरों के रिश्तेदार ज़रूर होते हैं."

"सच," बिनी अपना कौतुहल नहीं रोक सका.

"क्या तुम्हारे किसी चचेरे, ममेरे भाई की शक्ल तुमसे कुछ-कुछ मिलती-जुलती हुई है?" प्रोफेसर वुड ने पूछा.

"हाँ," बिनी ने कहा, "मेरे चाचा का लड़का देखने में काफी कुछ मेरे जैसा लगता है."

"ऐसा क्यों होता है, क्या तुम्हें पता है?" प्रोफेसर ने पूछा.

बिनी ने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम."

"तुम्हारे और चाचा के लड़के के दादाजी तो एक ही हैं. क्यों है न?" प्रोफेसर ने पूछा.

बिनी ने कुछ देर सोचा फिर कहा,

"यह तो सच है."

प्रोफेसर वुड ने पूछा,

"दो अलग-अलग किस्म के जानवरों का ढांचा एक-सामान कैसे हो सकता है?

शायद अब तुम इस प्रश्न का उत्तर दे सको?"

"शायद उन जानवरों के दादा, पर-दादा एक ही हूँ."

"तुम्हारा जवाब कुछ-कुछ ठीक है," प्रोफेसर ने कहा.

"दादा, पर-दादा से हमारा मतलब लाखों-करोड़ों साल पुराने जीवों से है.

चलो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाना हूँ.

आज से करीब पांच करोड़ साल पहले एक जानवर था.

उसका सिर लोमड़ी जैसा था.

उसकी पूँछ लम्बी थी.

उसके दांत और पंजे पैने थे.

उसी प्रकार के जानवर से ही बाद में शेर, चीते, तेंदुए और बिल्लियां बनीं.

ये सभी जानवर एक-दूसरे के रिश्तेदार हैं."

"मैं समझा," बिनी ने कहा.

प्रोफेसर ने कहा, "ये जानवर एक-दूसरे के रिश्तेदार तभी होंगे, जब हम इन सबके किसी एक पूर्वज को खोज पाएं."

जॉन ने कहा, "चलो पहले हम अपने जानवरों को सही क्रम में लगाते हैं."

"फिर तो हम पूर्वजों को कोई खोजने वाले जासूस बन जायेंगे," बिनी ने कहा.

अंत में प्रोफेसर वुड ने कहा, "यह तो मैंने कभी सोचा भी नहीं. असल में यही तो मेरा पेशा है."

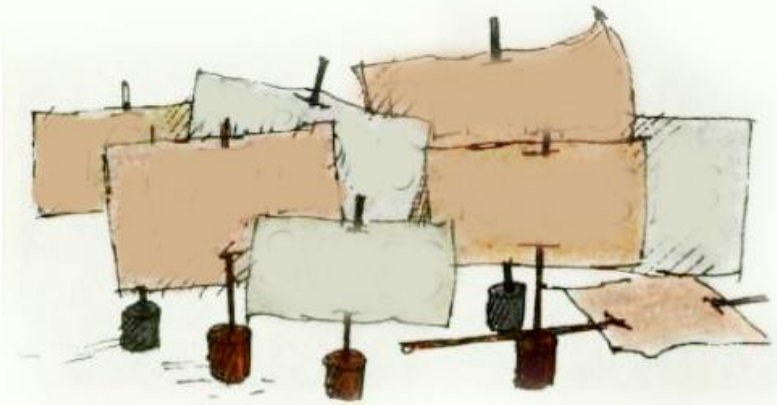

अंत